मैथिली (प्रतिष्ठा)

बी० ए० (H) पार्ट - III

पेपर - V

बसंत कुमार

अतिथि शिक्षक

दिनांक - 07-07-20

1. मैथिली साहित्यक आधुनिक काल :-

आधुनिक शब्द आपेक्षिक थिक। सब युग अपनाकेँ गत युगसँ आधुनिक बुझैत रहल अछि तेँ ई कहब कठिन अछि जे आधुनिक युग ककरा कही। चौदहम शताब्दीमे विद्यापति मैथिली भाषाकेँ ततेक आधुनिक बुझलनि आ कहलनि जे संस्कृत आ प्राकृतसँ वेशी मधुर अछि तहिना चंदा झा बीसम शताब्दीकेँ आधुनिक बुझलनि आओर भुवनजीकेँ आधुनिकता अनबाक गौरव प्राप्त भेलनि। किन्तु ई कहब कठिन अछि जे अमुख कवि आधुनिक छथि। वर्तमानमे जे आधुनिक अछि, भविष्यमे आधुनिक नहि रहत।

आधुनिक भारतीय साहित्यक इतिहास 18वीं शताब्दीक वैज्ञानिक अभ्युत्थान, पाश्चात्य जगतसँ परिचय-सम्पर्क, बंग-भंग आओर स्वदेशी आन्दोलनक सक्रिय राष्ट्रीय चेतनाक इतिहास थिक।

पाश्चात्य विचारधारा भारतक बौद्धिक विकासमे गतिवर्द्धक शक्तिक काज कएलक। पाश्चात्य आ भारतीय ज्ञान-विज्ञानक संघर्षक परिणामस्वरूप

भारतीय धार्मिक भावनापर तीव्र आघात भेल। धर्म आ ईश्वरक स्थान बुद्धि एवं तर्क ल' लेलक। सम्पूर्ण यूरोपमे नव बौद्धिक चेतनाक लहरि पसरि गेल। डार्विन, रूसो, मिल सदृश विचारक एहि नव परिस्थितिसँ उपजल। ई लोकनि अपन चिन्तन द्वारा जाहि विचारक प्रतिपादन कयलनि, ताहिसँ समाज, राजनीति, धर्म आ दर्शनक प्राचीन मान्यता दृढ़ भ लागल। वैज्ञानिक आविष्कार जीवनयापनक नव साधन उपस्थित कयलक। औद्योगिक क्रान्तिक सूत्रपात भेल जाहिसँ उपनिवेशक स्थापना भेल। फलतः विश्वक इतिहासमे सामान्यवादक नव अध्याय खुलि गेल। पूर्वीय देशपर एकर जबरदस्त प्रभाव पड़ल।

सर्वप्रथम उच पादरी एब्राहम रोजर प्राच्य विद्याक सूचना पाश्चात्य जगतकेँ देलक। उपनिषदक अनुवादसँ समस्त यूरोप चकित भ' गेल। यूरोपीय भारतीय साहित्य एवं संस्कृतिक प्रति उत्सुक भेल आओर 1786 ई० मे सर विलियम जोन्सक प्रयाससँ कलकत्तामे एशियाटिक सोशायटिक स्थापना भेल। प्राचीन साहित्यिक वैभवकेँ प्रकाशमे आनबाक श्रेय एहि संस्थाकेँ अछि। संगहि तुलनात्मक भाषा-विज्ञानक जन्म भेल।

शेष अगिला अंकमे—